वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 142 | शनिवार 7 नवम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया | रूपचौदस की हार्दिक शुभकामनाएं

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

साइबर स्वच्छता अवेयरनेस समय की मांग: श्रीनिवास

आठ ई-वेस्ट कलेक्शन वाहनों को दिखाई हरी झंडी

ब्रिक्स सस्टेनेबल लाइफस्टाइल सप्ताह के दौरान राजस्थान



जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने साइबर स्वच्छता के प्रति सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं को आगे आकर व्यापक स्तर पर अवेयरनेस कार्यक्रम संचालित करने पर जोर देते हुए कहा कि आज डिजिटल सुरक्षा समय की मांग है। ब्रिक्स सस्टेनेबल लाइफस्टाइल सप्ताह, 2026 के दौरान ई-वेस्ट पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक एवं आधुनिक तकनीकों के माध्यम से अनुपयोगी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से सोना, चांदी सहित अन्य मूल्यवान धातुओं की रिकवरी की जा सकती है। इससे न केवल प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण संभव है, बल्कि ई-वेस्ट को उपयोगी संसाधन में परिवर्तित कर सर्कुलर इकोनॉमी को भी मजबूती मिलती है। कार्यक्रम की शुरूआत में मुख्य सचिव, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल की अध्यक्ष अपर्णा अरोरा, पर्यावरण सचिव शैलजा देवल एवं आरएसपीसीबी के सदस्य सचिव कपिल चंद्रवाल ने प्रदेश में इलेक्ट्रॉनिक कचरे के व्यवस्थित संग्रहण, वैज्ञानिक निस्तारण एवं अधिकाधिक रिसाइक्लिंग को प्रोत्साहित करने के लिए अवेयरनेस कार्यक्रम के तहत आठ ई-वेस्ट कलेक्शन वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्य सचिव ने ई-वेस्ट रिसाइक्लर्स द्वारा प्रदर्शित रिसाइक्लिंग प्रक्रिया एवं विभिन्न तकनीकी व्यवस्थाओं का अवलोकन किया।

ई-वेस्ट के औपचारिक संग्रहण तंत्र को मजबूत बनाने में आमनागरिकों की भूमिका

राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल के सदस्य सचिव कपिल चन्द्रावल ने मंडल द्वारा आयोजित की जा रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि सप्ताहभर प्रदेश में सस्टेनेबल लाइफस्टाइल, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, संसाधनों के संरक्षण, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। तकनीकी सत्र में ई-वेस्ट प्रबंधन एवं रिसाइक्लिंग के विभिन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों द्वारा चर्चा के दौरान ई-वेस्ट के औपचारिक संग्रहण तंत्र को मजबूत बनाने में आमनागरिकों की भूमिका, जागरूकता एवं जवाबदेही के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अनुपयोगी होने पर उन्हें सामान्य कचरे में फेंकने के बजाय अधिकृत कलेक्शन सेंटर एवं रिसाइक्लर्स तक पहुंचाना आवश्यक है। ई-वेस्ट के प्रभावी संग्रहण, पृथक्करण, परिवहन, वैज्ञानिक रिसाइक्लिंग एवं संसाधनों के पुनः उपयोग से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। इस दौरान मिशन लाइफ के अंतर्गत पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली अपनाने तथा जिम्मेदार उपभोग एवं अपशिष्ट प्रबंधन की शपथ भी दिलाई गई। पर्यावरण सचिव श्रीमती शैलजा देवल, माइंस विभाग की विशिष्ट सचिव श्रीमती नम्रता वृष्णि ने भी विचार व्यक्त किए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए केवल अपशिष्ट का निस्तारण ही पर्याप्त नहीं

अतिरिक्त मुख्य सचिव, खान एवं पेट्रोलियम विभाग तथा अध्यक्ष राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल अपर्णा अरोरा ने ई-वेस्ट के प्रभावी प्रबंधन में जनभागीदारी, उपभोक्ताओं की जिम्मेदारी तथा उत्पादकों एवं रिसाइक्लर्स की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए केवल अपशिष्ट का निस्तारण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि अपशिष्ट को संसाधन के रूप में पुनः उपयोग में लाने की दिशा में भी ठोस प्रयास आवश्यक हैं। इस दौरान उन्होंने मंडल द्वारा किए जा रहे सतत प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी। अध्यक्ष श्रीमती अपर्णा अरोरा ने बताया कि प्रदूषण नियंत्रण मण्डल द्वारा एक नवंबर से आयोजित सप्ताह के दौरान 5 नवंबर तक 59 हजार कार्यक्रमों का आयोजन कर 7 लाख 60 हजार से अधिक प्रदेशवासियों को इस कार्यक्रम से जोड़ा है। उन्होंने बताया कि प्रदूषण नियंत्रण के प्रति मण्डल की सजगता को इसी से समझा जा सकता है कि इस दौरान करीब 27 विभागों को जोड़ा गया।

नचिकेतन पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेल उत्सव संपन्न



विजेता खिलाड़ियों और स्वयंसेवकों को किया सम्मानित, विद्यार्थियों ने उत्साह से लिया प्रतियोगिताओं में भाग

ऐलनाबाद.शाबाश इंडिया

शहर के बाईपास रोड स्थित नचिकेतन पब्लिक स्कूल में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेल उत्सव का 6 नवंबर को समापन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के चेयरमैन राजेन्द्र सिंह सिद्धु, सचिव छबील दास सुथार और निदेशक रणजीत सिंह सिद्धु ने किया। अतिथियों का तिलक लगाकर और बैज पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दीं। खेल उत्सव में कक्षा 3 से 12वीं तक के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं में 100 मीटर, 200 मीटर और 400 मीटर दौड़, गोला फेंक, ऊंची कूद, लंबी कूद, पीठू, वॉलीबॉल, रस्साकशी और खो-खो सहित विभिन्न खेल आयोजित किए गए। विद्यार्थियों ने खेल भावना के साथ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए। खेल उत्सव का औपचारिक शुभारंभ अतिथियों ने 100 मीटर दौड़ को हरी झंडी दिखाकर किया। इसके बाद विद्यालय के खेल प्रशिक्षकों और शिक्षकों ने विभिन्न आयु वर्गों के विद्यार्थियों की प्रतियोगिताएं संपन्न करवाईं। समापन समारोह में विजेता खिलाड़ियों और स्वयंसेवकों को विद्यालय प्रबंधन समिति की ओर से सम्मानित किया गया। आयोजन में खेल प्रशिक्षक सोनू, शिवम अरोड़ा, प्रहलाद राय, सभी शिक्षक और स्वयंसेवकों का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर विद्यालय चेयरमैन राजेन्द्र सिंह सिद्धु, सचिव छबील दास सुथार, निदेशक रणजीत सिंह, प्रशासक अशोक कुमार महोराना, प्राचार्य सत्यनारायण पारीक, प्रबंधन समिति के सदस्य परमिन्द्र सिंह, कपिल सुथार, शिवम सुथार, विद्यालय के प्रेस प्रवक्ता गुरसेवक सिंह सहित समस्त शिक्षक उपस्थित रहे। अंत में प्राचार्य सत्यनारायण पारीक ने सभी अतिथियों, शिक्षकों और सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग बनाए रखने की अपील की।

भगवान पद्मप्रभु का जन्म एवं तप कल्याणक 7 नवंबर को मनाया जाएगा

पदमपुरा में होगा भगवान पद्मप्रभु विधान, जैन मंदिरों में होंगे विशेष धार्मिक आयोजन



जयपुर.शाबाश इंडिया। जैन धर्म के छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव शनिवार, 7 नवंबर को श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रदेशभर के दिगंबर जैन मंदिरों में सुबह भगवान की अभिषेक, शांतिधारा एवं विशेष पूजा-अर्चना के आयोजन होंगे। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इस अवसर पर दिगंबर जैन मंदिरों में भगवान पद्मप्रभु के मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक एवं शांतिधारा की जाएगी। इसके बाद विशेष पूजा-अर्चना के दौरान जन्म एवं तप कल्याणक के श्लोकों का उच्चारण करते हुए जयकारों के साथ अर्घ्य समर्पित किया जाएगा। अंत में महाआरती होगी। उन्होंने बताया कि दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) में अध्यक्ष सुधीर जैन एवं मानद मंत्री हेमंत सोगानी के नेतृत्व में मुनि मार्दव नंदी महाराज के सान्निध्य में भगवान पद्मप्रभु विधान पूजा का आयोजन होगा। पदमपुरा स्थित साधु सेवा तीर्थ में आचार्य शशांक सागर महाराज ससंघ तथा निमोड़िया के गोलोक धाम में आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में विशेष धार्मिक आयोजन होंगे। विनोद जैन ने बताया कि जयपुर के दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र नेवटा, आगरा रोड स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी, मोती सिंह भोमियों का रास्ता स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर चौबीस महाराज एवं श्री दिगंबर जैन मंदिर जीऊबाईजी, सांगानेर के दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर संघीजी, जनकपुरी तथा तारों की कूट पर सूर्य नगर स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर सहित विभिन्न मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना होगी। चातुर्मास स्थलों पर भी दिगंबर जैन संतों के सान्निध्य में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

आगामी कल्याणक महोत्सवों की तिथियां भी घोषित

विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार सोमवार, 9 नवंबर को भगवान महावीर का 2553वां निर्वाणोत्सव एवं मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया जाएगा। बुधवार, 11 नवंबर को जैन धर्म के नौवें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंत का ज्ञान कल्याणक महोत्सव तथा रविवार, 15 नवंबर को 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का गर्भ कल्याणक महोत्सव श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाएगा। इन अवसरों पर भी दिगंबर जैन मंदिरों में सुबह विशेष पूजा-अर्चना एवं धार्मिक आयोजन होंगे।

सी.आर.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज में "वेस्ट टू वॉव" दीया बनाओ प्रतियोगिता आयोजित

छात्राओं ने मिट्टी के दीये बनाकर सजाए, रंगोली में दिखाई रचनात्मक प्रतिभा





ऐलनाबाद.शाबाश इंडिया। सी.आर.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज, ऐलनाबाद में दीपावली के पावन अवसर पर ''वेस्ट टू वॉव-दीया बनाओ'' गतिविधि एवं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए मिट्टी के दीये स्वयं तैयार किए तथा उन्हें विभिन्न रंगों और सजावटी सामग्रियों से आकर्षक रूप प्रदान किया। इसके साथ ही छात्राओं ने सुंदर रंगोलियां बनाकर अपनी रचनात्मकता और कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के चेयरमैन ईश कुमार मेहता, प्राचार्य जगदीश मेहता, शैक्षणिक मामलों की प्रमुख डॉली मेहता, शिक्षा महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सी.आर.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज के अतिरिक्त प्रभारी डॉ. रंजीत सिंह तथा समन्वयक अर्जुन सिंह सहित समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. डॉली मेहता ने छात्राओं को स्वयं मिट्टी के दीये बनाकर उन्हें आकर्षक ढंग से सजाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियां छात्राओं की रचनात्मकता को बढ़ावा देने के साथ-साथ उन्हें भारतीय संस्कृति, पारंपरिक कला और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाती हैं। ऐसी प्रतियोगिताओं से छात्राओं को अपनी कलात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने और नई चीजें सीखने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी कला एवं हुनर से सभी को प्रभावित किया।

सफलता की दौड़ में कहीं स्वयं को ही न खो दें : अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

दूसरों से आगे निकलने की होड़ में सुख, शांति और परिवार को न भूलें; सफलता के साथ आत्मसंतोष भी जरूरी



पुष्पगिरी तीर्थ (सोनकच्छ). शाबाश इंडिया। परम पूज्य पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में व्रत चक्रवर्ती पट्टविभूषण अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पीयूष सागरजी महाराज ससंघ वर्षायोग के लिए पुष्पगिरी तीर्थ में विराजमान हैं। उनके पावन सान्निध्य में प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि जीवन में सफल होना अच्छी बात है, लेकिन सफलता प्राप्त करने की अंधी दौड़ में स्वयं को खो देना जीवन की सबसे बड़ी विफलता है। आचार्य श्री ने कहा कि आज हर व्यक्ति किसी न किसी दौड़ में शामिल है। कोई धन के पीछे भाग रहा है तो कोई नाम, पद और प्रतिष्ठा के पीछे। सोशल मीडिया ने इस प्रतिस्पर्धा को और तेज कर दिया है। दूसरों की उपलब्धियां देखकर व्यक्ति को लगने लगता है कि वह पीछे रह गया है। इसी तुलना और प्रतिस्पर्धा में वह अपनी वास्तविक पहचान, खुशियां और जीवन का आनंद भूलता जा रहा है।

सफलता की अंधी दौड़ में शांति न खोएं

आचार्य श्री ने कहा कि यह दौड़ ऐसी है, जिसकी कोई अंतिम मंजिल नहीं है। एक लक्ष्य पूरा होते ही दूसरा लक्ष्य सामने आ जाता है। 10 हजार रुपए की नौकरी मिलने पर 50 हजार रुपए कमाने की इच्छा होती है और 50 हजार मिलने पर 1 लाख रुपए की चाह पैदा हो जाती है। इस निरंतर होड़ में व्यक्ति सोना, हंसना और परिवार के साथ समय बिताना तक भूल जाता है। याद रखिए, सफलता का अर्थ केवल ऊंचाइयों तक पहुंचना नहीं, बल्कि भीतर से शांत और संतुष्ट रहना भी है। यदि सफलता के कारण आपकी नींद और मन का सुकून छिन जाए तो ऐसी सफलता का क्या लाभ? आचार्य श्री ने कहा कि जीवन में बड़े सपने अवश्य देखने चाहिए, लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए धैर्य, संयम और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। कोई भी व्यक्ति एक दिन में अपनी मंजिल तक नहीं पहुंचता। रोज छोटे-छोटे कदम उठाने वाला व्यक्ति ही एक दिन बड़ी सफलता प्राप्त करता है। सोशल मीडिया की चमक-दमक देखकर बार-बार अपना रास्ता बदलना उचित नहीं है। अपने लक्ष्य पर विश्वास रखिए और प्रतिदिन पूरी निष्ठा से प्रयास करते रहिए। जो व्यक्ति धैर्य के साथ आगे बढ़ता है, वह जीवन में लंबी दूरी तय करता है।

दूसरों से तुलना नहीं, अपनी क्षमताओं को पहचानें

आचार्य श्री ने कहा कि आज के समय में तुलना करना व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरियों में से एक बनता जा रहा है। किसी का वेतन अधिक है, किसी की गाड़ी बड़ी है तो किसी के सोशल मीडिया पर अधिक पसंद मिल रहे हैं। दूसरों से तुलना करने की आदत हमारी खुशियां छीन लेती है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशेषता और क्षमता होती है। किसी के पास बुद्धि की शक्ति है तो किसी के पास मधुर वाणी और सेवा का भाव। इसलिए दूसरों जैसा बनने की दौड़ में शामिल होने के बजाय अपनी प्रतिभा को पहचानें और स्वयं का श्रेष्ठ स्वरूप विकसित करें।

बाहरी सफलता के साथ आंतरिक शांति भी आवश्यक

आचार्य श्री ने कहा कि बाहरी सफलता धन, गाड़ी, बंगले और पद-प्रतिष्ठा से दिखाई देती है, जबकि आंतरिक सफलता मन के सुकून, अच्छी नींद और चेहरे की मुस्कान में नजर आती है। पैसा बिस्तर खरीद सकता है, लेकिन नींद नहीं। पद कुर्सी दे सकता है, लेकिन सच्चा सम्मान नहीं। इसलिए जीवन में बाहरी उपलब्धियों और आंतरिक शांति के बीच संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है। दिनभर मेहनत करने के साथ अपने लिए, परिवार के लिए और आत्मचिंतन के लिए भी समय निकालना चाहिए।

सीनियर रैपिड ओपन शतरंज में अभिवादन भादुका और अंडर-12 में यथार्थ अग्रवाल विजेता



जयपुर. शाबाश इंडिया। वैशाली नगर स्थित ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल एकेडमी में आयोजित ''जयपुर दिवाली कप'' रैपिड ओपन शतरंज प्रतियोगिता एवं अंडर-12 शतरंज टूर्नामेंट-2026 का सफलतापूर्वक समापन हुआ। प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्गों के खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी शतरंज प्रतिभा का प्रदर्शन किया। टूर्नामेंट समन्वयक जिनेश कुमार जैन ने बताया कि प्रतियोगिता जयपुर जिला शतरंज संघ से मान्यता प्राप्त थी। इसका आयोजन जयपुर चेस अकादमी ने किया, जबकि जयपुर चेस क्लब एवं वाणी चेस क्लब का सहयोग रहा। सीनियर रैपिड ओपन वर्ग में अभिवादन भादुका ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 6 अंक के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया। अर्नव गुप्ता द्वितीय और तरुण अंदाना तृतीय स्थान पर रहे। अनुज चोमल ने चतुर्थ तथा आदित्य वासवानी ने पांचवां स्थान प्राप्त किया। जयपुर जिला शतरंज संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विक्रम सिंह ने बताया कि विभिन्न आयु वर्गों के प्रमुख परिणाम इस प्रकार रहे सीनियर रैपिड ओपन प्रतियोगिता के आयु वर्गवार परिणाम

अंडर-11 वर्ग

बालक प्रथम : ऋत्विक श्रीवास्तव

बालक द्वितीय : कियांश जितेंद्र

बालिका प्रथम : आर्या जैमन

अंडर-13 वर्ग

बालक प्रथम : वेद खूंटेटा

बालक द्वितीय : अद्वय वाजपायी

बालिका प्रथम : विशका शर्मा

जयपुर चेस अकादमी के सर्वश्रेष्ठ बालक : शिवम जैन



राजनीति

कथावाचकों का बाजार और आस्था का कारोबार

भारत की पहचान आध्यात्मिकता, धार्मिक सहिष्णुता और नैतिक मूल्यों से रही है। धर्म सत्य, करुणा, सेवा और मानवता का जीवन-मूल्य है। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता और पुराणों की कथाएँ पीढ़ियों को जीवन-मूल्य सिखाती आई हैं। लेकिन आज प्रश्न है कि धर्म जनकल्याण का माध्यम है या व्यावसायिक आयोजन बनता जा रहा है? देश में कथा-वाचन का संसार तेजी से बढ़ा है। भव्य पंडाल, आकर्षक मंच, महंगे ध्वनि उपकरण और सामाजिक माध्यमों पर प्रचार धार्मिक आयोजनों की पहचान बनते जा रहे हैं। कथावाचकों की लोकप्रियता कई बार ज्ञान के बजाय अनुयायियों की संख्या, आयोजन की भव्यता और प्रसिद्धि से आँकी जाती है। कथा-वाचन सम्माननीय परंपरा है। अनेक संत बिना दिखावे के ग्रंथों का मर्म समझाते और नैतिक चेतना जगाते हैं। समस्या परंपरा में नहीं, उसके व्यावसायीकरण में है। जब कथा की गुणवत्ता से अधिक कथावाचक की फीस, भीड़ और चढ़ावा महत्वपूर्ण हो जाए, तब आत्ममंथन जरूरी है। इस पर विचार करें। आयोजकों के बीच प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा दिखती है–किसका आयोजन बड़ा है और कहाँ अधिक भीड़ आई। इन चचाओं में कथा का संदेश पीछे छूट जाता है। सभी कथावाचकों को एक नजर से देखना उचित नहीं, लेकिन ऐसी प्रवृत्तियों पर सवाल उठाना समाज का दायित्व है। श्रद्धालु आस्था से दान देते हैं। इस भावना का सम्मान होना चाहिए, लेकिन दान की पारदर्शिता और उपयोग की जवाबदेही भी आवश्यक है। धर्म के नाम पर जुटी राशि जनसेवा के बजाय व्यक्तिगत वैभव और प्रचार पर खर्च हो, तो श्रद्धा कमजोर पड़ती है। दूसरी ओर, अनेक बच्चे शिक्षा और भोजन से वंचित हैं, गरीब मरीज उपचार के लिए सहायता खोजते हैं और विद्यालय संसाधनों की कमी से जूझते हैं। विचार करना चाहिए कि धार्मिक आस्था का उद्देश्य केवल भव्य चढ़ावा है या जरूरतमंदों का जीवन संवारना भी। धर्म का सौंदर्य भूखे को भोजन, अशिक्षित को शिक्षा और पीड़ित को सहारा देने में प्रकट होता है। राम के आदर्श मर्यादा और लोककल्याण, कृष्ण का संदेश कर्म और कर्तव्य तथा बुद्ध की शिक्षाएँ करुणा और अहिंसा का मार्ग दिखाती हैं। इन संदेशों को सुनाना पर्याप्त नहीं; व्यवहार में उतारना ही सच्ची धार्मिकता है। सामाजिक माध्यमों ने प्रवचनों को व्यापक पहुँच दी है और लोकप्रियता की प्रतिस्पर्धा बढ़ाई है।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

संपादकीय

मिट्टी के दीयों से रोशन हो दीपावली

आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत से दूर होते जा रहे हैं। दीपावली पर मिट्टी के दीये जलाने की परंपरा सिमट रही है। उनकी जगह बिजली की झालरों और कृत्रिम रोशनी ने ले ली है। यह बदलाव संस्कृति, पर्यावरण और कुम्हारों की आजीविका को प्रभावित कर रहा है। धनतेरस से दीपावली के पांच दिवसीय महापर्व की शुरूआत हो गयी। धनतेरस केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था का भी पर्व है, जो समाज



के अंतिम व्यक्ति तक समृद्धि पहुंचाता है। दीपावली मिट्टी के दीयों से जुड़ी है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष का वनवास पूरा कर अयोध्या लौटने पर नगरवासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था। तभी से कार्तिक अमावस्या को दीपोत्सव मनाने की परंपरा चली आ रही है। मिट्टी का दीया पूजा का साधन ही नहीं, सांस्कृतिक पहचान, सादगी और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक है। कृत्रिम रोशनी का आकर्षण तेजी से बढ़ा है। बिजली की रंग-बिरंगी लाइटें घरों और बाजारों को सजाती हैं, लेकिन पारंपरिक दीयों का महत्व घटा है। पटाखों का धुआं और शोर वायु तथा ध्वनि प्रदूषण बढ़ाते हैं। इससे बच्चों, बुजुर्गों, सांस संबंधी परेशानी वाले लोगों और पशु-पक्षियों को कठिनाई होती है। त्योहार की खुशी किसी के लिए परेशानी न बने, इसका ध्यान रखना हमारी जिम्मेदारी है। इस बदलाव का आर्थिक पक्ष भी है। मिट्टी के दीये बनाने वाले कुम्हारों का पुश्तैनी व्यवसाय प्रभावित हुआ है। पहले दीपावली से कई सप्ताह पहले लोग उन्हें दीयों के ऑर्डर देते थे। परिवार मिलकर दीये बनाते और बेचते थे। आमदनी सीमित होने पर भी उन्हें अपनी कला और परंपरा आगे बढ़ाने का संतोष रहता था। आज मांग घटने से अनेक कुम्हार दूसरे रोजगार अपनाने को मजबूर हैं। कई घरों में मिट्टी के दीये औपचारिकता के लिए जलाए जाते हैं और सजावट बिजली की झालरों से होती है। स्थानीय कुम्हार से दीये खरीदना उसके श्रम, हुनर और आजीविका का सम्मान है। हमारी छोटी-सी पहल किसी कारीगर के घर में खुशियों का उजाला पहुंचा सकती है। मिट्टी के दीये की लौ में सादगी और आत्मीयता है। तेल या घी से जलता दीया घर में शांति का वातावरण बनाता है। दीये जलाते समय तेल, बाती और अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग जरूरी है। पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी सजावट और बिजली के इस्तेमाल में संयम रखने से भी पूरी होती है। हमारी संस्कृति केवल दीप जलाने तक सीमित नहीं है। घर की स्वच्छता, पकवान बांटना, पड़ोसियों से मिलना और जरूरतमंदों की सहायता करना भी दीपावली की भावना है। घर में रोशनी तभी सार्थक है, जब आसपास के लोगों के जीवन में भी खुशियां पहुंचें। युवा पीढ़ी इस परंपरा को आगे बढ़ा सकती है। परिवार, विद्यालय और सामाजिक संस्थाएं मिट्टी के दीयों के महत्व तथा प्रदूषण के दुष्परिणामों पर जागरूकता फैला सकते हैं। बच्चों को कुम्हारों की कला से परिचित कराना चाहिए, ताकि वे समझें कि हर दीये के पीछे किसी परिवार का श्रम और कौशल है। दीपावली प्रकाश, प्रेम और सद्भाव का पर्व है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

मन के भीतर भी स्वच्छता जरूरी

कांतिलाल मांडोत

भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पर्व में आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक संदेश निहित है। दीपावली से पूर्व मनाई जाने वाली नरक चतुर्दशी हमें बाहरी स्वच्छता के साथ मन, विचार और व्यवहार को निर्मल बनाने की प्रेरणा देती है। इसका उद्देश्य घर की सफाई तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन से बुराइयों और नकारात्मकता को दूर करना भी है। पौराणिक मान्यता के अनुसार नरकासुर नामक असुर ने देवताओं और मनुष्यों को आतंकित कर रखा था। देवताओं की प्रार्थना पर भगवान श्रीकृष्ण ने उसका वध कर संसार को मुक्त कराया। इसी घटना की स्मृति में नरक चतुर्दशी मनाई जाती है। प्रतीकात्मक रूप से नरकासुर समाज की बुराइयों, अव्यवस्था और अपवित्रता का प्रतीक है। उसका वध जीवन से इन विकारों को मिटाने की प्रेरणा देता है। वर्षा ऋतु के बाद गलियों, सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर कीचड़, गंदा पानी और कचरा जमा हो जाता है। रुकी नालियों में मच्छर पनपते हैं और डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ता है। वातावरण को स्वच्छ रखना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। अपने घर के साथ मोहल्ले और सार्वजनिक स्थलों को साफ रखना भी जरूरी है। अक्सर लोग घर चमका देते हैं, रंग-रोगन करवाते हैं और साफ वस्त्र पहनते हैं, लेकिन बाहर कचरा डालने से नहीं हिचकते। यह कैसी स्वच्छता है? वास्तविक स्वच्छता वही है, जिसमें व्यक्ति घर के साथ समाज और पर्यावरण का ध्यान रखे। सामूहिक जिम्मेदारी स्वस्थ समाज की नींव है। इस पर्व का महत्वपूर्ण संदेश आंतरिक स्वच्छता है। शरीर की सफाई के साथ मन और विचारों को निर्मल बनाना जरूरी है। यदि मन में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, निंदा, चुगली, अहंकार और छल-कपट हों, तो बाहरी स्वच्छता अधूरी है। मन के विकार दूर किए बिना शांति संभव नहीं। स्वयं के भीतर झांककर विचारों और व्यवहार की पड़ताल करनी चाहिए। जैन दर्शन में संयम, अहिंसा और आत्मशुद्धि को महत्व दिया गया है। भगवान महावीर ने हिंसा, परिग्रह और जीवों को पीड़ा पहुंचाने से दूर रहने का संदेश दिया। स्थानांग सूत्र में महाआरंभ, महापरिग्रह, पंचेंद्रिय जीवों की हिंसा और मांसाहार को नरकगति के कारणों में गिनाया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने काम, क्रोध और लोभ को नरक के तीन द्वार बताया है। इन पर नियंत्रण आत्मिक उन्नति का मार्ग है। अहंकार पतन का कारण है। स्वयं को श्रेष्ठ समझने पर व्यवहार में कठोरता आ जाती है। विनम्रता और सद्भाव के बिना संबंध मधुर नहीं रह सकते। विश्वासघात और दूसरों को कष्ट पहुंचाना मन को अशांत करता है। आत्मशुद्धि का अर्थ अपने दोष पहचानकर सुधारना है। नरक चतुर्दशी दीपावली की तैयारी का पर्व है। धनतेरस सेवा और परोपकार की प्रेरणा देता है, जबकि नरक चतुर्दशी तन, घर, समाज और मन की स्वच्छता का संदेश देती है। लक्ष्मी पूजन से पहले मन को शुभ विचारों से प्रकाशित करना चाहिए। सफाई में संसाधनों का अनावश्यक उपयोग न हो; स्वच्छता विवेकपूर्ण और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार ढंग से होनी चाहिए। आइए, संकल्प लें कि आसपास गंदगी नहीं फैलाएंगे और मन में नकारात्मकता को स्थान नहीं देंगे। निंदा के स्थान पर सद्भाव, ईर्ष्या के स्थान पर सहयोग और अहंकार के स्थान पर विनम्रता अपनाएंगे। घर स्वच्छ, विचार पवित्र और व्यवहार मधुर होगा, तभी पर्व का उद्देश्य सार्थक होगा। बाहर का अंधकार दीपक मिटाता है, भीतर का अंधकार ज्ञान, संयम और सदाचार दूर करते हैं। यही नरक चतुर्दशी का शाश्वत संदेश है।

सीनियर रैपिड ओपन शतरंज में अभिवादन भादुका और अंडर-12 में यथार्थ अग्रवाल विजेता



जयपुर. शाबाश इंडिया

वैशाली नगर स्थित ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल एकेडमी में आयोजित ''जयपुर दिवाली कप'' रैपिड ओपन शतरंज प्रतियोगिता एवं अंडर-12 शतरंज टूर्नामेंट-2026 का सफलतापूर्वक समापन हुआ। प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्गों के खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी शतरंज प्रतिभा का प्रदर्शन किया। टूर्नामेंट समन्वयक जिनेश कुमार जैन ने बताया कि प्रतियोगिता जयपुर जिला शतरंज संघ से मान्यता प्राप्त थी। इसका आयोजन जयपुर चेस अकादमी ने किया, जबकि जयपुर चेस क्लब एवं वाणी चेस क्लब का सहयोग रहा। सीनियर रैपिड ओपन वर्ग में अभिवादन भादुका ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 6 अंक के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया। अर्नव गुप्ता द्वितीय और तरुण अंदाना तृतीय स्थान पर रहे। अनुज चोमल ने चतुर्थ तथा आदित्य वासवानी ने पांचवां स्थान प्राप्त किया। जयपुर जिला शतरंज संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विक्रम सिंह ने बताया कि सीनियर रैपिड ओपन प्रतियोगिता के विभिन्न आयु वर्गों के प्रमुख परिणाम इस प्रकार रहे–

अंडर-11 वर्ग

बालक प्रथम : ऋत्विक श्रीवास्तव
बालक द्वितीय : कियांश जितेंद्र
बालिका प्रथम : आर्या जैमन
अंडर-13 वर्ग
बालक प्रथम : वेद खूंटेटा
बालक द्वितीय : अद्वय वाजपायी
बालिका प्रथम : विशका शर्मा
जयपुर चेस अकादमी के सर्वश्रेष्ठ बालक : शिवम जैन

अंडर-15 वर्ग

बालक प्रथम : दर्श विकास शर्मा
बालक द्वितीय : अथर्व अगल
बालिका प्रथम : ध्रुवी शर्मा
बालिका द्वितीय : नायशा खंडेलवाल

महिला वर्ग

प्रथम : कनिष्का अंदाना
द्वितीय : प्रीति श्रीमाल

वेटरन्स वर्ग

प्रथम : नवीन तोषनीवाल
द्वितीय : विजेंद्र बांगर
अंडर-12 रैपिड शतरंज टूर्नामेंट के परिणाम
अंडर-12 शतरंज टूर्नामेंट में यथार्थ अग्रवाल ने प्रथम, तारा शर्मा ने द्वितीय और लिहान वर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
अंडर-7 वर्ग
बालक
प्रथम : पाइला चाडविक लेल
द्वितीय : अरिव गोलचा
बालिका
प्रथम : एकांशी चंदेल
अंडर-9 वर्ग
बालक
प्रथम : रुद्राक्ष शर्मा
द्वितीय : रेयांश गुप्ता
जयपुर चेस अकादमी के सर्वश्रेष्ठ बालक : अर्जुन राव
बालिका
प्रथम : यशिका माहेश्वरी
द्वितीय : पृद्विका शर्मा
प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि जयपुर जिला शतरंज संघ के कोषाध्यक्ष मधु मेहता एवं उपाध्यक्ष अशोक चोमल ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को कुल 25,000 रुपए की नकद पुरस्कार राशि के साथ ट्रॉफी, पदक एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन उपमहापौर सरोज कंवर ने प्रथम चाल चलकर किया।
आयोजकों ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से बच्चों एवं युवाओं में शतरंज के प्रति रुचि बढ़ती है। साथ ही उन्हें अपनी प्रतिभा को जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। टूर्नामेंट को सफल बनाने में आयोजकों, सहयोगी संस्थाओं, निर्णायकों, अभिभावकों एवं सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

जिनेश कुमार जैन:
टूर्नामेंट समन्वयक

जबलपुर के युवा व्यवसायी नितिन जैन जगदलपुर में चार्टर्ड अकाउंटेंट सदस्यों को बताएंगे जीएसटी के नए नियम और टैलीप्राइम के आधुनिक फीचर

जबलपुर. शाबाश इंडिया

मध्य भारत के अग्रणी सेवा प्रदाताओं में शामिल पीसी प्लेनेट के संस्थापक नितिन जैन को भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान के जगदलपुर सीपीई चैप्टर की ओर से आयोजित दीपावली मिलन समारोह में विशेष व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम 12 नवंबर को जगदलपुर स्थित शगुन फार्म्स में आयोजित होगा। इस अवसर पर नितिन जैन जीएसटी के नए नियमों, अनुपालन की प्रक्रिया और टैलीप्राइम की उपयोगिता पर सनदी लेखाकार सदस्यों के साथ परिचर्चा करेंगे। सत्र में टैलीप्राइम के नए फीचर और स्वचालन के माध्यम से जीएसटी एवं आयकर संबंधी कार्यों को अधिक सरल, तेज और प्रभावी बनाने के तरीकों की विस्तृत जानकारी दी जाएगी। व्यवसाय प्रौद्योगिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी समाधान के क्षेत्र में 20 वर्षों से अधिक का अनुभव रखने वाले नितिन जैन के नेतृत्व में पीसी प्लेनेट टैली समाधान, क्लाउड सेवाओं, सॉफ्टवेयर एकीकरण, स्मार्ट क्लास और बैठक कक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत है। जगदलपुर सीपीई चैप्टर के कार्यक्रम संयोजक विवेक सोनी एवं सह-संयोजक नीरव मोटीवाला ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य सनदी लेखाकार सदस्यों को जीएसटी



के बदलते प्रावधानों एवं आधुनिक तकनीकी समाधानों की जानकारी देना है। साथ ही दीपावली के अवसर पर आपसी मेल-मिलाप और संवाद का अवसर उपलब्ध कराना भी इसका उद्देश्य है। कार्यक्रम शाम 3:30 बजे शुरू होगा और समापन रात्रिभोज के साथ होगा।



गोलोक धाम चाकसू में 29 नवंबर को होगा जैन विचारकों एवं पत्रकारों का महासम्मेलन

महावीर स्वामी के शासनकाल में राजा श्रेणिक अब तक के सबसे बड़े पत्रकार थे : आचार्य प्रज्ञासागर



जयपुर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य आचार्य श्री प्रज्ञासागरजी महाराज ससंघ का चातुर्मास गोलोक धाम, चाकसू (जयपुर) में चल रहा है। चातुर्मास स्थापना के बाद से अब तक आचार्य श्री के सान्निध्य में कई ऐतिहासिक आयोजन संपन्न हो चुके हैं और यह क्रम निरंतर जारी है। इसी क्रम में 3 नवंबर को जैन समाज के वैचारिक राष्ट्रीय संगठन जैन महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल गोलोक धाम पहुंचा। प्रतिनिधिमंडल ने वहां नवनिर्मित गौशाला का अवलोकन किया तथा आचार्य श्री के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि इस अवसर पर आचार्य श्री ने अपने संबोधन में कहा कि भगवान महावीर स्वामी के शासनकाल में 60 हजार प्रश्न पूछने वाले राजा श्रेणिक अब तक के सबसे बड़े पत्रकार हुए हैं। जैन पत्रकारिता में सत्य, निष्पक्षता और धर्म की विचारधारा को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से श्री महावीर तपोभूमि परिवार, उज्जैन की ओर से दिया जाने वाला ''राजा श्रेणिक जैन पत्रकारिता पुरस्कार-2026'' दैनिक समाचार जगत के संपादक शैलेंद्र गोधा, जयपुर को प्रदान किया जाएगा। यह पुरस्कार 29 नवंबर को गोलोक धाम में जैन पत्रकार महासंघ के तत्वावधान में आयोजित पत्रकार महासम्मेलन में दिया जाएगा। गत वर्ष 2025 में यह पुरस्कार दैनिक विश्व परिवार के संपादक प्रदीप जैन, रायपुर (छत्तीसगढ़) को शिक्षा नगरी कोटा में प्रदान किया गया था। इस आयोजन की तैयारियों को लेकर जैन पत्रकार महासंघ की कार्यकारिणी एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों की बैठक 5 नवंबर को भट्टारकजी की नसियां, जयपुर में वरिष्ठ पत्रकार बलवंत राज मेहता की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि महासम्मेलन में देशभर के पत्रकारों, लेखकों और विद्वानों की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। इस अवसर पर वैचारिक गोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा। कार्यक्रम को गति प्रदान करने के लिए राकेश जैन चपलमन, कोटा को मुख्य संयोजक तथा दीपक गोधा, मनोज जैन और सुरेंद्र कुमार बड़जात्या, जयपुर को संयोजक मनोनीत किया गया। कार्यक्रम के आयोजकों में चातुर्मास समिति के अध्यक्ष अनिल कुमार जैन बैनेठा वाले, महामंत्री पारस जैन बाकलीवाल निमोड़िया वाले, राजीव जैन गाजियाबाद, प्रकाश बाकलीवाल एवं देवेंद्र बाकलीवाल, जयपुर शामिल हैं। बैठक में डॉ. अनिल जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष; महेंद्र बैराठी, राष्ट्रीय प्रचार मंत्री; बलवंत राज मेहता, दीपक गोधा, मनोज जैन, सुरेंद्र कुमार जैन बड़जात्या, ज्ञानचंद पाटनी, मनोज सोगानी, मनीष वैद सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। बैठक का संचालन उदयभान जैन ने किया। अंत में सभी का आभार व्यक्त किया गया।

प्रेषक : उदयभान जैन, जयपुर

जैन समाज 9 नवंबर को मनाएगा भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव



मदनगंज-किशनगढ़.शाबाश इंडिया। सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाण महोत्सव कार्तिक कृष्ण अमावस्या, सोमवार 9 नवंबर 2026 को श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया जाएगा। यह आयोजन परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 विहर्षसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में होगा। कार्यक्रम के तहत प्रातः 8 बजे श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी के चरणों में निर्वाण लड्डू अर्पित किया जाएगा। इसके बाद प्रातः 9 बजे आर.के. कम्युनिटी सेंटर में भगवान महावीर स्वामी की निर्वाण स्थली सिद्धक्षेत्र पावापुरी की भव्य कृत्रिम रचना तैयार की गई है। इसका अनावरण किया जाएगा तथा भगवान के चरणों में निर्वाण लड्डू अर्पित किया जाएगा। इस अवसर पर सकल दिगंबर जैन समाज के श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित होकर भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव में शामिल होंगे।



आचार्य सुंदर सागरजी महाराज ससंघ की दर्शन यात्रा निकाली

भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक महोत्सव 9 नवंबर को मनाया जाएगा

निवाई. शाबाश इंडिया



सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाण महोत्सव एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव 9 नवंबर को विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर निवाई के जैन मंदिरों में गाजे-बाजे के साथ भगवान महावीर स्वामी के चरणों में निर्वाण लड्डू अर्पित किए जाएंगे। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि आचार्य सुंदर सागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। जौंला ने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 9 नवंबर को सुबह 6 बजे श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में विधिवत मंत्रोच्चार के साथ भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण लड्डू अर्पित किया जाएगा। इस अवसर पर समाज की ओर से बैंड-बाजों के साथ शोभायात्रा निकाली जाएगी। शोभायात्रा बड़ा जैन मंदिर से रवाना होकर बिचला जैन मंदिर, नसियां जैन मंदिर, बंपुई वालों के चैत्यालय, सूरजमल बाबाजी के चैत्यालय एवं भगवान महावीर मार्ग स्थित शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर सहित शहर के सभी जिनालयों तक पहुंचेगी। यहां भगवान महावीर स्वामी के चरणों में निर्वाण लड्डू अर्पित किए जाएंगे। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी ने संपूर्ण विश्व को अहिंसा, करुणा और ''जियो और जीने दो'' का संदेश दिया। जैन ग्रंथों के अनुसार भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन स्वाति नक्षत्र में निर्वाण पद प्राप्त किया था। उनके निर्वाण के समय देवों ने दीप प्रज्वलित कर उत्सव मनाया था। तभी से निर्वाण लड्डू अर्पित करने की परंपरा चली आ रही है। चातुर्मास कमेटी के मीडिया प्रभारी सुनील भाणजा एवं विमल जौंला ने बताया कि 6 नवंबर को जैन समाज निवाई की ओर से आचार्य सुंदर सागरजी महाराज ससंघ की दर्शन यात्रा निकाली गई। इसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं एवं युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दर्शन यात्रा कृषि मंडी के सामने स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर से रवाना होकर अहिंसा सर्किल स्थित चंद्रप्रभु मंदिर, बड़ा जैन मंदिर, बिचला जैन मंदिर एवं नसियां जैन मंदिर होते हुए वापस शांतिनाथ जैन मंदिर पहुंची। यहां श्रद्धालुओं ने अभिषेक एवं शांतिधारा का आयोजन किया। दर्शन यात्रा का शुभारंभ सुंदर युवा मंच एवं जिनोदय युवा संघ की ओर से जैन धर्म की ध्वजा फहराकर किया गया। इस अवसर पर सुंदर युवा मंच के अध्यक्ष महेश मोठूका, संजय सिरस, रौनक बोहरा, अनंत सांवलिया, चिराग टोंग्या, शंभू कठमाणा, सुनील बनेठा, मनीष जैन सहित अनेक समाजजन उपस्थित रहे।

मंगल विहार जैन मंदिर में पहली बार साकार होगी पावापुरी तीर्थक्षेत्र की भव्य रचना

तीन दिवसीय ''अर्हमयी दीपोत्सव'' आज से, 9 नवंबर तक होंगे धार्मिक आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जयपुर के मंगल विहार स्थित जैन मंदिर में पहली बार पावापुरी तीर्थक्षेत्र की भव्य एवं दिव्य रचना साकार की जाएगी। भगवान महावीर स्वामी के 2553वें निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर तीन दिवसीय ''अर्हमयी दीपोत्सव'' श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ शनिवार से शुरू होगा। यह महोत्सव 9 नवंबर तक चलेगा। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अमित गोधा ने बताया कि इस विशेष धार्मिक आयोजन में पावापुरी तीर्थक्षेत्र की भव्य रचना के माध्यम से भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक की स्मृति को सजीव किया जाएगा। आयोजन का प्रमुख आकर्षण 24 तीर्थंकरों के पावन चरणों की स्थापना एवं पावापुरी की दिव्य संरचना होगी, जो श्रद्धालुओं के लिए विशेष आध्यात्मिक अनुभूति का केंद्र बनेगी। उन्होंने बताया कि यह संपूर्ण आयोजन परम पूज्य सम्यक्त्ववर्धिनी भक्ताम्बर साधिका आर्यिकारत्न 105 अर्हंश्री माताजी, श्रमणी 105 संस्कृतश्री माताजी एवं श्रमणी 105 अर्हनश्री माताजी के पावन सान्निध्य एवं आशीर्वाद में आयोजित किया जा रहा है। महोत्सव के प्रथम दिन शनिवार को 24 तीर्थंकरों के चरणों की स्थापना, पावापुरी रचना का शुद्धिकरण, विशेष पूजन एवं भगवान महावीर स्वामी की महाआरती सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम होंगे। दूसरे दिन 8 नवंबर को अभिषेक एवं शांतिधारा, भगवान आदिनाथ पूजन, 24 तीर्थंकर पूजन, गणधर स्वामी पूजन तथा विशेष धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे। वहीं, 9 नवंबर को भगवान महावीर स्वामी की विशेष पूजा-अर्चना, अभिषेक, शांतिधारा एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों के साथ महोत्सव का समापन होगा। अमित गोधा ने बताया कि अर्हम वर्षायोग समिति-2026, मंगल विहार, जयपुर के तत्वावधान में आयोजित इस महोत्सव में भगवान आदिनाथ जनकल्याण समिति, श्री आदिनाथ महिला मंडल एवं केशरी अभिषेक समूह का सहयोग रहेगा। यह आयोजन जैन समाज में धर्म, संस्कृति, एकता एवं आध्यात्मिक चेतना को प्रोत्साहित करने की विशेष पहल है। आयोजन समिति ने सभी श्रद्धालुओं से अधिकाधिक संख्या में शामिल होकर इस धार्मिक आयोजन को भव्य एवं सफल बनाने की अपील की है।







मुनि श्री मंगल सागर महाराज का पंचम दीक्षा दिवस धार्मिक उल्लास के साथ मनाया



मुनिराजों की त्यागमय चर्या एवं साधना से श्रावकों को मिल रही धर्माचरण की प्रेरणा

नवागढ़ (मनोज जैन नायक)

प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि श्री सरल सागरजी महाराज के शिष्य मुनि श्री मंगलानंद सागरजी एवं मुनि श्री मंगल सागरजी महाराज का चातुर्मास विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ संपन्नता की ओर अग्रसर है। इसी क्रम में मुनि श्री मंगल सागरजी महाराज का पंचम दीक्षा दिवस क्षेत्रीय जैन समाज की ओर से श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत के निर्देशन में तथा ब्रह्मचारी धीरज भैया, राहतगढ़, संघस्थ ब्रह्मचारी राजेश भैया, डॉ. निलेश भैया, पं. मनीष जैन संजू, पं. विकास जैन एवं पं. सुरेंद्रजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री नवागढ़ गुरुकुलम के बालक कु रक्षा जैन एवं श्रीमती आशा जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर किया। ब्रह्मचारियों एवं विद्वानों ने चित्र का अनावरण किया तथा अहमदाबाद निवासी गिरीश जैन ने दीप प्रज्वलित किया। क्षेत्रीय समाज, नवागढ़ समिति, गुरुकुलम, चातुर्मास समिति एवं महिला मंडल की ओर से ब्रह्मचारी धीरज भैया, मुनि श्री मंगल सागरजी महाराज के गृहस्थ जीवन के माता-पिता श्रीमती पूनम जैन एवं गिरीश जैन (अहमदाबाद), श्रीमती सविता जैन (मेरठ) सहित अतिथियों का स्वागत किया गया। समारोह में विद्वानों ने मुनि श्री मंगलानंद सागरजी एवं मुनि श्री मंगल सागरजी महाराज की साधना, संयम एवं त्यागमय चर्या की सराहना करते हुए कहा कि पंचम काल में भी चतुर्थ कालीन चर्या का पालन करने वाले ये संत निष्पृह, आडंबर रहित एवं लोकेषणा से दूर रहकर साधनारत हैं। दोनों मुनिराज चातुर्मास के माध्यम से श्रावकों को आध्यात्मिक वातावरण प्रदान कर श्रेष्ठ धर्माचरण की प्रेरणा दे रहे हैं। इस अवसर पर घुवारा निवासी रविकुमार एवं उनकी धर्मपत्नी वंदना ने दो प्रतिमा के व्रत पालन का संकल्प लिया। नवागढ़ गुरुकुलम के विद्यार्थियों ने भी अपनी क्षमता के अनुसार धार्मिक संकल्प ग्रहण किए। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की पूजन के माध्यम से आचार्य श्री समयसागरजी, मुनि श्री सरल सागरजी एवं मुनि श्री मंगलानंद सागरजी महाराज के प्रति श्रद्धाभाव अर्पित किए गए। इसके बाद मुनि श्री मंगल सागरजी महाराज के चरणों की पूजन की गई।

चरित्र ही मुक्ति का साधन है : मुनि श्री मंगल सागर

मुनि श्री मंगल सागरजी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि दर्शन और ज्ञान से भी अधिक महत्वपूर्ण चरित्र है। जैन दर्शन में कहा गया है ''चारित्रं खलु धम्मो'', अर्थात चरित्र ही वास्तविक धर्म है। चरित्र ही मुक्ति का साधन और कर्मों के क्षय का निमित्त बनता है। मनुष्य अपने चरित्र के माध्यम से अशुभ एवं अमंगलकारी प्रवृत्तियों से बच सकता है। अपनी कषायों और पाप प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाकर जीवन को मंगलमय बना सकता है और मोक्षमार्ग प्रशस्त कर सकता है। धर्म का वास्तविक स्वरूप सदाचरण एवं आत्मसंयम अपनाने में है।

संसार से हटेंगे, तभी आत्मा के निकट पहुंचेंगे : मुनि श्री मंगलानंद सागर

मुनि श्री मंगलानंद सागरजी महाराज ने कहा कि जीवन को श्रेष्ठ बनाना है तो संसार की ओर कदम बढ़ाने के बजाय अपनी आत्मा की ओर कदम बढ़ाना होगा। हम जितना संसार से हटेंगे, उतना ही आत्मा के निकट पहुंचेंगे। तभी आत्मावलोकन के माध्यम से आत्मविशुद्धि कर सकेंगे। 84 लाख योनियों के चक्र से बचने के लिए जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर अपने आराध्य के गुणों को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

देरांठू में 'समावेश रथ' के तहत धूमधाम से मनाई दीपावली

दिव्यांगजनों के साथ पूजा-अर्चना और सुरक्षित आतिशबाजी कर दिया समानता एवं समावेशन का संदेश

नसीराबाद (रोहित जैन, ब्यूरो चीफ)

राजस्थान महिला कल्याण मंडल, चाचियावास की ओर से संचालित ''समावेश रथ'' परियोजना के अंतर्गत श्रीनगर ब्लॉक की देरांठू ग्राम पंचायत में धनतेरस के पावन अवसर पर विशेष समावेशी दीपावली कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में समावेश रथ एवं आरोग्य सारथी टीम के सदस्यों के साथ दिव्यांगजनों, बच्चों, महिलाओं, पंचायत प्रतिनिधियों और ग्रामवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विधि-विधान से लक्ष्मी-गणेश पूजन एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। नवनिर्वाचित सरपंच चम्पा दिनेश चौधरी, उपसरपंच राजकुमार जैन, ''दिव्यांग जगत''



के वरिष्ठ पत्रकार मुकेश वैष्णव सहित अन्य गणमान्य अतिथियों ने दिव्यांगजनों एवं ग्रामीणों के साथ सामूहिक पूजा-अर्चना कर क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की। समारोह के दौरान सुरक्षा मानकों का ध्यान रखते हुए दिव्यांग बच्चों एवं अन्य प्रतिभागियों के साथ सुरक्षित तरीके से फुलझड़ियां जलाई गईं और दीपावली की खुशियां साझा की गईं। रोशनी और आतिशबाजी के बीच बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे। समारोह को संबोधित करते हुए सरपंच दिनेश चौधरी ने कहा कि दीपावली का वास्तविक मर्म तभी सार्थक होता है, जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को समान और सम्मानित महसूस करे। उन्होंने ग्रामीणों से दिव्यांगजनों के प्रति किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करने तथा उनके साथ समानता एवं आत्मीयता का व्यवहार करने का आह्वान किया। वरिष्ठ पत्रकार मुकेश वैष्णव ने समाज में समावेशन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दिव्यांगजनों को दया की नहीं, बल्कि समान अधिकारों और अवसरों की आवश्यकता है। कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों एवं प्रतिभागियों को मिठाई वितरित की गई। पूरे आयोजन के दौरान देरांठू ग्राम पंचायत में सामाजिक समरसता, संवेदनशीलता और समावेशन का प्रेरक वातावरण देखने को मिला।

साहित्य साधना के पांच दशकों का गौरवशाली अभिनंदन, प्रकाश तातेड़ को राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मान



सम्मान ग्रहण करने के बाद तातेड़ ने अपनी आभार अभिव्यक्ति के माध्यम से साहित्यिक यात्रा से जुड़े अनुभवों और भावनाओं को साझा किया। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने प्रसंगानुकूल आशीर्वचन एवं मंगलकामनाएं प्रदान करते हुए उपस्थित लेखक समुदाय को प्रेरित किया। उनके सानिध्य ने समारोह को आध्यात्मिक ऊँचाई और वैचारिक गरिमा प्रदान की।

लाडनूं में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में मिला प्रतिष्ठित सम्मान

उदयपुर/लाडनूं. शाबाश इंडिया

साहित्य जब महज शब्दों की अभिव्यक्ति न रहकर जीवन मूल्यों, नैतिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का संवाहक बन जाता है, तब उसकी साधना समाज के लिए प्रेरणा और साहित्यकार का व्यक्तित्व अनुकरणीय बन जाता है। ऐसी ही सृजनशील प्रतिबद्धता, वैचारिक निष्ठा और पाँच दशकों की अनवरत साहित्य साधना के लिए उदयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार प्रकाश तातेड़ को प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ''अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2026'' से सम्मानित किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी लाडनूं में आचार्य महाश्रमण के पावन सानिध्य में आयोजित गरिमामय समारोह में साहित्य, संस्कार और नैतिक मूल्यों का अनुपम संगम देखने को मिला। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अध्यक्ष प्रताप दुगड़, महासचिव मनोज सिंघवी तथा अणुव्रत लेखक मंच संयोजक जिनेंद्र कोठारी ने प्रकाश तातेड़ को उत्तरीय ओढ़ाकर, सम्मान पट्ट एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनकी दीर्घकालीन साहित्यिक सेवाओं का अभिनंदन किया।

शब्द साधना से सामाजिक चेतना तक का प्रेरक सफर

सम्मान समारोह में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने प्रशस्ति पत्र का वाचन करते हुए प्रकाश तातेड़ के बहुआयामी साहित्यिक व्यक्तित्व और उल्लेखनीय उपलब्धियों को रेखांकित किया। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन से उनके पचास वर्षों के आत्मीय जुड़ाव, लेखन और संपादन के क्षेत्र में सतत सक्रियता तथा विभिन्न साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों में उनके महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख किया। समारोह में अणुव्रत लेखक मंच से जुड़े सौ से अधिक साहित्यकारों की उपस्थिति ने इस अवसर को विशेष गरिमा प्रदान की। सम्मान ग्रहण करने के बाद तातेड़ ने अपनी आभार अभिव्यक्ति के माध्यम से साहित्यिक यात्रा से जुड़े अनुभवों और भावनाओं को साझा किया। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने प्रसंगानुकूल आशीर्वचन एवं मंगलकामनाएँ प्रदान करते हुए उपस्थित लेखक समुदाय को प्रेरित किया। उनके सानिध्य ने समारोह को आध्यात्मिक ऊँचाई और वैचारिक गरिमा प्रदान की।



राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष केवल एक साहित्यकार का चयन

उल्लेखनीय है कि अणुव्रत लेखक पुरस्कार की शुरूआत वर्ष 1997 में हुई थी। राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष केवल एक साहित्यकार को प्रदान किया जाने वाला यह सम्मान साहित्यिक जगत में विशिष्ट प्रतिष्ठा रखता है। इससे पूर्व 25 साहित्यकार इस गौरवपूर्ण सम्मान से अलंकृत हो चुके हैं। प्रकाश तातेड़ की इस उपलब्धि पर यूनिक ग्रुप मेंबर्स सहित युगधारा साहित्यिक संस्था, विज्ञान समिति, एम.बी. कॉलेज पूर्व छात्र परिषद तथा सलिला संस्था-सलूंबर ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी हैं। प्रकाश तातेड़ का यह सम्मान केवल एक साहित्यकार की व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि उन जीवन मूल्यों और रचनात्मक आदर्शों का अभिनंदन है, जिनके सहारे साहित्य समाज में नैतिकता, संवेदना और सकारात्मक परिवर्तन की ज्योति प्रज्वलित करता है।

रिपोर्ट: राकेश शर्मा 'राजदीप'

कथक नृत्यांगना अनायना सिंघवी राजस्थान यूथ इंस्पिरेशन अवार्ड से सम्मानित





जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान इंटरनेशनल में आयोजित राजस्थान यूथ इंस्पिरेशन अवार्ड समारोह में राजस्थानी लोकनृत्य भवई एवं कथक नृत्यांगना अनायना सिंघवी को सम्मानित किया गया। उन्हें विख्यात राजस्थानी लोकगीत गायिका सीमा मिश्रा ने सम्मान प्रदान किया। समारोह में देश के विभिन्न शहरों से आए कलाकारों, कंटेंट क्रिएटर्स एवं युवाओं को उनकी प्रतिभा और उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पद्मश्री सम्मान से अलंकृत विभूतियों सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। सम्मान प्राप्त करने पर अनायना सिंघवी ने आयोजक अंजली सिंह एवं लोकगीत गायिका सीमा मिश्रा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनका विशेष रूप से धन्यवाद किया।

श्री धन्वंतरि सेवा समिति, जौहरी बाजार ने किया भगवान धन्वंतरि का पूजन-अर्चन



जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री धन्वंतरि सेवा समिति, जौहरी बाजार की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान श्री धन्वंतरि का पूजन-अर्चन किया गया। भगवान धन्वंतरि के प्राकट्य दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर सुख-स्वास्थ्य एवं आरोग्य की कामना की। समिति के अध्यक्ष वीरेंद्र राणा ने बताया कि समाज की ओर से उपलब्ध कराई गई सामग्री एवं प्रबंधन द्वारा की गई व्यवस्थाओं के माध्यम से समिति जरूरतमंदों सहित सभी वर्गों के लोगों को निःशुल्क औषधियां एवं चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराती है। भगवान धन्वंतरि की प्रेरणा से समिति समय-समय पर निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन भी करती है। इन शिविरों में विभिन्न प्रकार के रोगों से पीड़ित लोगों को उपचार की सुविधा दी जाती है। उन्होंने बताया कि समिति के सभी पदाधिकारी एवं प्रबंधन से जुड़े सदस्य सेवा भावना से कार्य करते हैं। जोड़ों का दर्द, गठिया, सिरदर्द, रक्तचाप, मधुमेह, स्त्री रोग सहित विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार में आयुर्वेद की महत्वपूर्ण भूमिका है। श्री धन्वंतरि सेवा समिति, श्री धन्वंतरि औषधालय एवं श्री धन्वंतरि भेषज निर्माणशाला द्वारा उच्च गुणवत्ता वाली औषधियों का निर्माण किया जाता है। गुणवत्ता के कारण यह औषधालय देश के प्रतिष्ठित औषधालयों एवं चिकित्सालयों में अपनी पहचान बना रहा है। इस अवसर पर एक्यूप्रेशर एवं आयुर्वेद मर्म चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. पीयूष त्रिवेदी को सम्मानित किया गया। संस्था के अध्यक्ष वीरेंद्र राणा ने उन्हें शॉल एवं प्रतीक चिह्न भेंट किया। इस दौरान डॉ. त्रिवेदी ने श्री धन्वंतरि औषधालय की ओर से किए जा रहे कार्यों की जानकारी ली तथा यहां निर्मित औषधियों की गुणवत्ता की सराहना की। उन्होंने कहा कि औषधालय की औषधियां गुणवत्तापूर्ण हैं और रोगियों के उपचार में उपयोगी साबित हो रही हैं। कार्यक्रम में संस्था के प्रबंधन से जुड़े कैलाश कुमार अग्रवाल, रामधन अत्तार, महावीर गर्ग, प्रो. श्रीनिवास शर्मा, डॉ. राजेश चतुर्वेदी, डॉ. गुप्तेश गुप्ता, केदारनाथ शर्मा, शिवशंकर गौड़ एवं रामदयाल चौधरी सहित संस्था के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर अन्य चिकित्सकों को भी शॉल एवं भगवान धन्वंतरि का चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन समिति अध्यक्ष वीरेंद्र राणा ने किया।

जीवन को सुखी बनाने का तरीका है ''लाइन ऑफ कंट्रोल'' : गुरु मां विज्ञाश्री माताजी

9 नवंबर को भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा



गुन्सी। सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ, गुन्सी में प्रातः भगवान शांतिनाथजी का अभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न हुई। इसके पश्चात दूर-दराज से आए श्रद्धालुओं ने भगवान के छत्र एवं चंवर अर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि इस अवसर पर गुरु मां विज्ञाश्री माताजी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि लौकिक सुख सांसारिक वस्तुओं से प्राप्त होने वाला अस्थायी सुख है, जबकि पारलौकिक सुख आध्यात्मिक होने के कारण स्थायी होता है। प्रत्येक व्यक्ति के सुख प्राप्त करने के उद्देश्य और दृष्टिकोण में भिन्नता होना स्वाभाविक है। जीवन के परम लक्ष्य सुख की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संयम की आवश्यकता होती है। गुरु मां ने कहा कि संयम केवल संत-महात्माओं तक सीमित नहीं है, बल्कि गृहस्थों के लिए भी सुखमय जीवन जीने का महत्वपूर्ण आधार है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक ''लाइन ऑफ कंट्रोल'' निर्धारित करनी चाहिए। इच्छाओं, व्यवहार और संसाधनों पर नियंत्रण रखकर ही जीवन में संतुलन एवं वास्तविक सुख प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि जो मनुष्य तन, मन और धन से तीर्थों के निर्माण में सहयोग करता है, उसके जीवन का निर्माण भी संभव होता है। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि 9 नवंबर 2026 को प्रातः 6 बजे से चातुर्मास निष्ठापन क्रिया तथा प्रातः 9 बजे से भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। वहीं शाम को धनतेरस एवं दीपावली के पावन अवसर पर भव्य महाआरती का आयोजन किया जाएगा। आयोजन समिति ने सभी धर्मप्रेमियों से अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करने का आग्रह किया है।

वर्ल्ड कॉलेज में फ्रेशर पार्टी "सेलिब्रिटी नाइट-2026" में अभिनेत्री निया शर्मा ने बिखेरा जलवा

शानदार प्रस्तुति और जोशीली ऊर्जा से अभिनेत्री ने बांधा समां, विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ लिया भाग

गुरुग्राम. शाबाश इंडिया



बेहतरीन शिक्षा और शानदार प्लेसमेंट के लिए अपनी अलग पहचान बना चुके वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट में फ्रेशर पार्टी ''सेलिब्रिटी नाइट-2026'' का आयोजन उत्साह एवं उमंग के साथ किया गया। कार्यक्रम में मशहूर टेलीविजन एवं बॉलीवुड अभिनेत्री निया शर्मा ने अपनी शानदार प्रस्तुति और जोशीली ऊर्जा से समां बांध दिया। कॉलेज के रजिस्ट्रार युद्धवीर सिंह लांबा ने बताया कि जैसे ही अभिनेत्री निया शर्मा ने मंच पर कदम रखा, पूरा परिसर तालियों और उत्साहपूर्ण स्वागत से गूंज उठा। उनकी शानदार प्रस्तुति ने विद्यार्थियों को झूमने पर मजबूर कर दिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला और यह आयोजन सभी के लिए यादगार बन गया। वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के प्रबंध न्यासी कुंवर निशांत सिंह ने नए शैक्षणिक सत्र में प्रवेश लेने वाले एमसीए, एमबीए, एमटेक, बीटेक, बीबीए, बीसीए एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के सभी छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें पूर्ण मनोयोग, लगन, निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। कॉलेज प्रबंधन के अनुसार, वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से संबद्ध है तथा अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है। कॉलेज में बीटेक के अंतर्गत रोबोटिक्स एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मैकेनिकल एवं ऑटोमेशन इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एवं डिजाइन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं मशीन लर्निंग, सिविल इंजीनियरिंग तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग सहित विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इसी प्रकार एमटेक में कंप्यूटर एडेड स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डेटा साइंस, सिविल इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। कॉलेज प्रबंधन के अनुसार, ये पाठ्यक्रम बाजार एवं उद्योग जगत की बदलती मांगों को ध्यान में रखते हुए संचालित किए जा रहे हैं, ताकि विद्यार्थियों को रोजगार के बेहतर अवसर मिल सकें।

10 हजार रुपए का एक रिचार्ज और 3 साल तक नो टेंशन, जियो ने लॉन्च किया नया प्लान

रोजाना 2.5 जीबी हाई-स्पीड 5जी डेटा सहित मिलेंगी कई सुविधाएं

जियोहॉटस्टार, कैनवा प्रो लाइट और 50 जीबी क्लाउड स्टोरेज का लाभ

7 नवंबर से उपलब्ध होगा प्लान, 3 साल तक कीमत और सुविधाएं रहेंगी बरकरार

मुंबई. शाबाश इंडिया



रिलायंस जियो ने ग्राहकों के लिए 10 हजार रुपए का नया तीन वर्षीय प्लान लॉन्च किया है। एक बार रिचार्ज कराने के बाद ग्राहकों को अगले 3 साल तक दोबारा रिचार्ज कराने की जरूरत नहीं होगी। कंपनी ने इसे दूरसंचार उद्योग में अपनी तरह का पहला प्लान बताया है। खास बात यह है कि ग्राहकों को पूरे 3 साल तक मौजूदा कीमत और प्लान में शामिल सभी सुविधाओं का लाभ मिलता रहेगा। इस प्लान में अनलिमिटेड 5जी डेटा, अनलिमिटेड वॉयस कॉलिंग, रोजाना 2.5 जीबी हाई-स्पीड डेटा और प्रतिदिन 100 एसएमएस की सुविधा मिलेगी। प्लान की वैधता पूरे 3 साल होगी। कॉलिंग और डेटा सुविधाओं के अलावा ग्राहकों को जियोहॉटस्टार मोबाइल के साथ हॉलीवुड सामग्री देखने की सुविधा भी मिलेगी। इसमें लाइव खेल प्रसारण, हॉटस्टार के विशेष कार्यक्रम और मनोरंजन से जुड़े अन्य कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही 12 महीने का कैनवा प्रो लाइट सब्सक्रिप्शन तथा फाइल, फोटो और दस्तावेज सुरक्षित रखने के लिए जियो एआई क्लाउड पर 50 जीबी मुफ्त स्टोरेज भी मिलेगा। जियो का यह नया प्लान 7 नवंबर 2026 से उपलब्ध होगा। ग्राहक मायजियो ऐप, जियो की वेबसाइट, जियो स्टोर, खुदरा केंद्रों और अन्य रिचार्ज माध्यमों से इस प्लान का लाभ उठा सकेंगे।

भगवान महावीर का "जियो और जीने दो" का अहिंसा संदेश आज भी प्रासंगिक



9 नवंबर को महावीर निर्वाणोत्सव पर विशेष

विजय कुमार जैन राघौगढ़, मध्य प्रदेश

अहिंसा के अवतार और युगदृष्टा भगवान महावीर का 2553वां निर्वाणोत्सव कार्तिक कृष्ण अमावस्या, सोमवार, 9 नवंबर 2026 को मनाया जाएगा। भगवान महावीर युगपुरुष ही नहीं, महामानव थे। वे जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। क्षत्रिय राजकुमार होने के बावजूद उन्होंने कभी विश्व विजय का सपना नहीं देखा। राजमहलों के वैभव का त्याग कर 30 वर्ष की आयु में वैराग्य का मार्ग चुना। 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। इसके पश्चात लगातार 30 वर्षों तक धर्मदेशना देते हुए 72 वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। उनका संपूर्ण दर्शन स्वयं पर शासन करना सिखाता है, दूसरों पर नहीं। जिस समय भगवान महावीर का अवतरण हुआ, उस समय दुनिया में हिंसा और अत्याचार का बोलबाला था। ऐसी विषम परिस्थितियों में उन्होंने विश्व को सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाया। प्राणीमात्र के सुख और कल्याण के लिए उन्होंने ''जियो और जीने दो'' का अमूल्य मंत्र दिया। भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के अवसर पर आज उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर विचार करना आवश्यक है। कोरोना जैसी महामारी की पुनरावृत्ति रोकने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के प्रति दुनिया में जागरूकता बढ़ी है। शाकाहार, जीवदया और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता जैसे विचारों को भी नए सिरे से महत्व दिया जा रहा है।

भगवान महावीर ने कहा था...

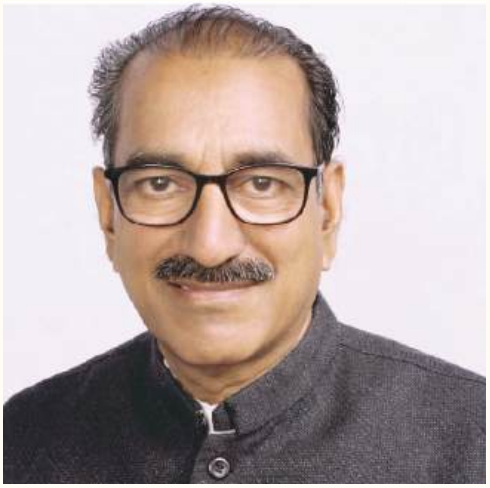
''सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं।''

अर्थात सभी जीव जीना चाहते हैं, कोई भी मरना नहीं चाहता। उनके तीन प्रमुख सिद्धांत आज भी विश्वशांति की कुंजी हैं–

1. अहिंसा परमो धर्म: महावीर की अहिंसा केवल जीवों की हत्या न करने तक सीमित नहीं है। मन, वचन और कर्म से किसी को भी कष्ट न पहुंचाना ही सच्ची अहिंसा है। आज जब पर्यावरण संकट, युद्ध और हिंसा चरम पर हैं, तब महावीर का ''जियो और जीने दो'' का संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रत्येक प्राणी में आत्मा है और उसे जीने का अधिकार है।

2. अपरिग्रह: आज की सबसे बड़ी समस्याओं में उपभोक्तावाद भी शामिल है। अधिक से अधिक संग्रह करने की दौड़ ने मनुष्य को अशांत कर दिया है। महावीर ने ढाई हजार वर्ष पहले ही संदेश दिया था कि आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना चाहिए। अपरिग्रह ही संतुलित जीवन और पर्यावरण संरक्षण का मूलमंत्र है।

3. अनेकांतवाद और स्याद्वाद: यह महावीर का विश्व को दिया गया महत्वपूर्ण दार्शनिक उपहार है। सत्य के अनेक पहलू हो सकते हैं। अपने विचार को ही अंतिम सत्य मान लेना अनेक विवादों की जड़ है। अनेकांतवाद हमें दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करना सिखाता है। यदि आज परिवार, समाज और राष्ट्र इस सिद्धांत को अपना लें तो अनेक विवाद स्वतः समाप्त हो सकते हैं। विश्वप्रेम ही भगवान महावीर का दिव्य संदेश है। उनके सिद्धांतों को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया था। भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख आधार दूसरे देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना रहा है। वर्ष 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया। भारत ने पश्चिमी पाकिस्तान के क्षेत्र पर कब्जा करने के बजाय युद्ध के बाद अपनी सेनाएं वापस बुला लीं। भगवान महावीर का मंगल उपदेश था– पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। उन्होंने विरोधियों को विरोध से नहीं, बल्कि सद्भावना और शांति से जीतने का मार्ग दिखाया। भगवान महावीर ने दुनिया को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पावन संदेश दिया। इन सिद्धांतों पर चलकर उन्होंने सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त किया और समस्त मानवता को कल्याण का मार्ग बताया। भगवान महावीर ने कहा कि आत्मा के चार बड़े शत्रु काम, क्रोध, लोभ और मोह हैं। इनके प्रभाव में रहने वाला व्यक्ति जीवन में श्रेष्ठ कार्य नहीं कर पाता। आत्मकल्याण के लिए इन पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। विश्ववंदनीय भगवान महावीर के जीवन और दर्शन का गहराई से अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि वे किसी एक जाति या संप्रदाय तक सीमित नहीं थे, बल्कि संपूर्ण मानव समाज की अमूल्य धरोहर हैं। वे सबके थे और सब उनके थे। उनका जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ था, जबकि उनके प्रमुख गणधर इंद्रभूति गौतम ब्राह्मण थे। उनकी धर्मसभा अर्थात समवशरण में सभी धर्मों और जातियों के लोग उनकी दिव्य देशना और मंगल उपदेश सुनने आते थे। उन्हें केवल जैन समाज या जैन मंदिरों तक सीमित रखना उनके उदात्त और विराट व्यक्तित्व के प्रति अन्याय होगा। वे केवल जैन नहीं, बल्कि जिन थे। इंद्रियों से उत्पन्न वासनाओं और मन में उठने वाले कषायों पर विजय प्राप्त करने वाला व्यक्ति ''जिन'' कहलाता है। किसी का भी वास्तविक कल्याण केवल जैन बनकर नहीं, बल्कि अपने भीतर के विकारों पर विजय प्राप्त कर जिन बनने में है। भगवान महावीर ने त्याग और तपस्या से जीवन को महान बनाने



का संदेश दिया। उन्होंने श्रावकों को अपने आचरण में अहिंसा और जीवन में अपरिग्रह अपनाने की प्रेरणा दी। युगदृष्टा भगवान महावीर ने अहिंसा, करुणा और परोपकार की जो प्रेरणा दी, वह आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। उनके 2553वें निर्वाणोत्सव के पावन अवसर पर हमें वर्तमान विश्व परिस्थितियों पर चिंतन करने की आवश्यकता है। रूस-यूक्रेन युद्ध, मध्य पूर्व में जारी भीषण संघर्ष, दुनिया में बढ़ता अलगाववाद, आतंकवाद, संप्रदायवाद और हिंसा की प्रवृत्तियां मानवता के सामने गंभीर चुनौती हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों और वैश्विक राजनीति में बढ़ती एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों के बीच भी भगवान महावीर के सिद्धांत शांति, सह-अस्तित्व और संयम का मार्ग दिखाते हैं। महावीर के सिद्धांत प्राणीमात्र के लिए हितकारी हैं। आज हम त्याग, सेवा और परोपकार के मार्ग पर चलने के बजाय अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति में लिप्त होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने के स्थान पर उसे भटकाया जा रहा है। वह भारतीय संस्कृति और संस्कारों से विमुख होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रही है। जब समाज का नेतृत्व करने वाले लोग ही पतन के मार्ग पर चलने लगें तो नई पीढ़ी को आदर्श कहां से मिलेंगे? क्रांतिकारी जैन संत समाधिस्थ मुनि तरुण सागर जी महाराज ने अपने कड़वे प्रवचनों में कहा था कि भगवान महावीर को जैन मंदिरों की चारदीवारी से बाहर निकालकर नगर के मुख्य चौराहों तक लाना होगा, तभी जनमानस उनके जीवन और दर्शन को समझ सकेगा। दुनिया में सुख और शांति की स्थापना के लिए हमें हर कीमत पर भगवान महावीर के बताए मार्ग पर चलना होगा। तभी भारत की प्राचीन संस्कृति और विरासत की रक्षा हो सकेगी। भारत ने कभी हिंसा में विश्वास नहीं किया। हमारा विश्वास दूसरों की जान लेकर जीने में नहीं, बल्कि अपनी जान की बाजी लगाकर दूसरों की रक्षा करने में है। भगवान महावीर के बताए मार्ग का अनुसरण करने में ही हम सबका कल्याण है। भगवान महावीर का जन्मोत्सव और निर्वाणोत्सव मनाकर हम कहीं केवल औपचारिकता तो पूरी नहीं कर रहे? आवश्यकता इस बात की है कि हम उनके उपदेशों को अपने जीवन में उतारें और उनके बताए मार्ग पर चलें। भगवान महावीर के उपदेशों को जैन धर्म की सुप्रसिद्ध विनय-रचना ''मेरी भावना'' की ये पंक्तियां सार्थक करती हैं–

''मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्रोत बहे।''